पाठ 5

अपराजिता

(प्रस्तुत पाठ में एक दिव्यांग लड़की के अदम्य साहस एवं विलक्षण प्रतिभा का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति दृढ इच्छाशक्ति से विपरीत परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है |)

कभी कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है| हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दण्डित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया | फिर भी हम में से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता | मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनंदी मुद्रा में जेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं |

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था | अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गयी | कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हीलचेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गयी | दूसरे ही क्षण, धीरे धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हीलचेयर तक पहुँच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी | मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किये चली जा रही हो |

धीरे धीरे मेरा उससे परिचय हुआ | कहानी सुनी तो दंग रह गयी | नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी | मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से साजित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था |

वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया | लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गये, पर बायाँ हाथ चला गया। वह विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंजिल की शरण गही है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिये। इधर चन्द्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल, प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ।

‘मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बतायेंगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से सम्बन्धित कुछ सामग्री मिल सकेगी ?’

‘मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फेलोशिप मिल सकती है ?’

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हंैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी निरन्तर प्रतिभा डूबती जा रही है। आजकल वह आई0आई0टी0 मद्रास (चेन्नई) में काम कर रहीहै।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा, अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट लीहोगी।

'मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बना कर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निपटा लेती हूँ।'

उसने मुझे तस्वीरें दिखायीं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाये बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज से उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ0 चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, 'हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच0डी0 के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाय तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।' डॉ0 चन्द्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी0 सुब्रह्मण्यम् को पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन-साधना की और इस साधना का सुखद अन्त हुआ 1976 में, जब चन्द्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में, दिव्यांग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ0 चन्द्रा प्रथम भारतीय हैं।

'जब इसे सामान्य ज्वर के चैथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा- 'आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गरदन ही हिला पायेगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगी, 'मेरे गर्भ में

तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गयी।'

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गयी, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसकी स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गयी थीं। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

'नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्', मदर ने कहा, 'हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हीलचेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा ?'

'आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।' और फिर पूरी कक्षाओं में दिव्यांग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं।

प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चन्द्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी0 एस-सी0 किया, प्राणिशास्त्र में, एम0एस-सी0 में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट आॅफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। अपनी निष्ठा, धैर्य एवं

साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानियाँ से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ0 चन्द्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लेदर जैकेट से कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

'मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें ?'

मैंने जब ये कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आयीं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहंीं आने पायी, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आयी थी। फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाये। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैर का भी काम करते हों, निरन्तर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम दिव्यांग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रखकर वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ0 चन्द्रा, प्रधानमन्त्री के साथ मुस्कुराती खड़ी डॉ0 चन्द्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चन्द्रा और व्हील चेयर में लेदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ0 चन्द्रा।

'मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ0 मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्यचिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।' किन्तु डॉ0 चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, 'मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ0 चन्द्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।'

चन्द्रा के अलबम के अन्तिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे0सी0 बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं - 'वीर जननी' का पुरस्कार।

बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी, पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगां, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, 'ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।'

-गौरा पन्त 'शिवानी'

गौरा पन्त 'शिवानी' हिन्दी की लोकप्रिय कथा लेखिका हैं। इनका जन्म 17 अक्टूबर सन् 1923 ई0 को राजकोट गुजरात में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शान्तिनिकेतन में हुई। कोलकाता विश्वविद्यालय से इन्होंने सम्मान सहित बी0ए0 आनर्स उत्तीर्ण किया। इनकी संगीत के प्रति विशेष अभिरुचि रही। इन्हें जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 'पद्मश्री' पुरस्कार प्रमुख है। 'कृष्णकली', 'चैदह फेरे', 'पाताल भैरवी', 'श्मशान चम्पा', 'कैंजा', 'यात्रिक' आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी मृत्यु 21 मार्च सन् 2003 में हुई थी।

शब्दार्थ

अपराजिता=जो हारी न हो। विलक्षण=अद्भुत। विच्छिन्न=अलग किया हुआ। अभिशप्त=शाप से ग्रस्त। काया=शरीर। नियति=भाग्य। आघात=चोट। देवांगना=देवी, अप्सरा। मेधावी= बुद्धिमान। नूरमंजिल=लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल। उत्फुल्ल=प्रसन्न। विषाद= उदासी, दःुख। उत्कट=प्रबल। जिजीविषा=जीने की इच्छा। ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट=औषधि अनुसंधान संस्थान। माइक्रोबायोलाजी=जीवाणु विज्ञान। बायोडाटा=जीवन विवरण और उपलब्धियों का लेखा-जोखा। फेलोशिप=शोध

छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति। कंठगत=गले में अटके हुए। पटुता=निपुणता। यातनाप्रद=कष्ट देने वाला। पक्षाघात=लकवा रोग। सर्वांग=सारा अंग, पूरा भाग। अचल=निष्क्रिय। अभिशाप=बड़ा शाप। आर्थोपैडिक=हड्डियों से सम्बन्धित। उपचार=इलाज। जिरह-बख्तर=लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। क्षत-विक्षत=बुरी तरह घायल। आभामंडित =तेज से भरा हुआ। लेदर=चमड़ा। उल्लास=उमंग, खुशी। पोलियो=यह एक संक्रामक रोग है, जो अधिकतर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में होता है। यह शरीर के किसी अंग को अपाहिज कर देता है। इससे बचाव का एकमात्र तरीका है कि शून्य से पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो अभियान के हर चक्र में पोलियो की दो बूँद दवा अवश्य पिलायी जाय।

''दो बूँद जिन्दगी की''

प्रश्न अभ्यास

विचार और कल्पना

चलती ट्रेन में चढ़ने से लखनऊ के युवक का हाथ कट गया। रेलवे प्लेटफार्म पर कुछ निर्देश लिखे होते हैं, जैसे-

(क) चलती ट्रेन में न चढ़ें न उतरें।

(ख) रेलवे आपकी सम्पत्Ÿि है, इसकी रक्षा करें।

(ग) सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

(घ) ज्वलनशील पदार्थों को लेकर यात्रा न करें।

- इन निर्देशों का मतलब बताइए। यह भी कि इन निर्देशों का पालन क्यों करना चाहिए ?

- इस प्रकार के अन्य जागरूकता संबंधी निर्देशों का पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

कुछ करने को

1. (क) प्रसिद्ध लेखिका और समाज सेविका हेलेन केलर (सन् 1880.1968 ई0, अमेरिका) जिनकी डेढ़ वर्ष की अवस्था में बचपन की एक गम्भीर बीमारी के कारण देखने और सुनने की शक्ति जाती रही। वे भारत भी आयी थीं। उनके बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

(ख) हमारे देश में ऐसे कई खिलाड़ी,कलाकार,वैज्ञानिक,पर्वतारोही हुए हैं जिन्होने दिव्यांगता के बावजूद देश का नाम रौशन किया। उनके बारे में जानकारी संकलित कीजिए।

2. आपके आस-पास यदि कोई दिव्यांग व्यक्ति, जिन्होंने किसी कार्य में विशेष सफलता अर्जित की हो तो उनकी दिव्यांगता का कारण और सफलता के बारे में चर्चा कर अपनी कक्षा में सुनाइए।

3. इस पाठ की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ? लिखिए।

कहानी से

1. कौन-कौन से कथन सही हैं ? हमें अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है, जब-

(क) दूसरों के दु:ख अपने दु:खों से बड़े लगने लगते हैं।

(ख) हमारे कष्टों से बड़े कष्ट को कोई हँसकर झेलता दिखाई देता है।

(ग) अपने कष्टों के लिए विधाता को दोषी मान लेते हैं।

(घ) कष्टों को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

2. लेखिका क्यों चाहती थीं कि लखनऊ का युवक उनकी पंक्तियाँ पढ़े ?

3. डॉ0 चन्द्रा की कविताएँ देखकर लेखिका की आँखंे क्यों भर आयीं ?

4. डॉ0 चन्द्रा ने विज्ञान के अतिरिक्त किन-किन क्षेत्रों में उपलब्धियाँ प्राप्त कीं ?

5. निम्नलिखित कथनों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख) पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है।

(ग) मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे।

(घ) 'चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया'।

(ङ) ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

6. शारदा सुब्रह्मण्यम् को 'वीर जननी' का पुरस्कार क्यों मिला ?

7- इस पाठ की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया ? क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को 'ब'-'व' के उच्चारण-भेद पर ध्यान रखते हुए शुद्ध रूप में बोलकर पढ़िए।

सुब्रह्मण्यम्, बुद्धिदीप्त, जिजीविषा, विलक्षण, क्षत-विक्षत, विच्छिन्न।

2. 'यातना' शब्द संज्ञा है। उसमें 'प्रद' प्रत्यय जोड़ देने से 'यातनाप्रद' शब्द विशेषण बन जाता

है, जिसका अर्थ है- कष्ट देने वाला। नीचे लिखे शब्दों में 'प्रद' जोड़कर नये शब्द बनाइए

और उनके अर्थ लिखिए -

कष्ट, आनन्द, लाभ, हानि, ज्ञान।

3. निम्नलिखित वाक्य पढ़िए -

(क) इसके इस जीवन से तो मौत भली है।

(ख) मैंने जब वे कविताएँ देखीं तो आँखें भर आयीं।

वाक्य (क) में 'तो' निपात के रूप में प्रयुक्त है। 'निपात' उस शब्द को कहते हैं, जो वाक्य में कहीं भी रखा जा सकता है, जैसे- पर, भर, ही, तो। किन्तु वाक्य (ख) में 'तो', 'जब' के

साथ ‘तब’ के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ‘क’ और ‘ख’ की भाँति दो-दो वाक्य बनाकर लिखिए।

4. ‘वह बैसाखियों से ही ह्वील चेयर तक पहँुच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी।’ इस वाक्य में दो वाक्य हंै, दोनांे वाक्य स्वतंत्र अर्थ दे रहे हंै, किन्तु ये वाक्य ‘और’ से जुड़े हुए हंै। ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हंै। संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य होते हैं, जो ‘और’, ‘किन्तु’ या ‘इसलिए’ से जुड़े रहते हैं। संयुक्त वाक्य के कोई दो उदाहरण पाठ से चुनकर लिखिए।

5. पाठ में आये हुए अंग्रेजी भाषा के शब्दों को छाँटिए और लिखिए।

इसे भी जानें-

नोबेल पुरस्कार- विश्व का सबसे बड़ा पुरस्कार है।